

आसान हिन्दी तरजुमा

हाफिज़ नज़र अहमद



Written in Hindi by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY

Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858

Hyderabad, India

आसान तरजुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफिज़ नज़र अहमद

प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी

★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी

मुदीर मुजल्ला “अहले हदीस”, लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰

(अरबी - इस्लामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी

मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰

फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इस्लामियात)

★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक

ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी

ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

“आसान तरजुमा कुरआन मजीद” कई एतिबार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तरजुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाकिफ़ भी चन्द पारे पड़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को वा बरकत और वाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल विल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिए फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफिज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज़्री

3 दिसम्बर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا							
तुम खर्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम खर्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे
مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا							
हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	अल्लाह तो वेशक से (कोई) चीज़
لِبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ							
कि	क़व्ल	से	अपनी जान	पर	इसाईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर बनी इसाईल के लिए
تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنتُمْ							
तुम हो	अगर	फिर उस को पढ़ो	तौरत	सो तुम लाओ	आप कह दें	तौरत	नाज़िल की जाए (उतरे)
صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ							
उस	से - बाद	झूट	अल्लाह	पर	झूट बाँधे	फिर जो	93 सच्चे
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۖ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ							
इब्राहीम (अ)	दीन	अब पैरवी करो	अल्लाह	सच फ़रमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा) वह तो वही लोग
حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	मुक़र्र किया गया	घर	पहला	वेशक	95	मुशर्रिक (जमा)	से थे और न हनीफ
لِلَّذِي بُيِّنَّا مَبْرَكًا ۚ وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٦﴾ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا							
मुक़ामे	खुली	निशानियां	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला मक्का में जो
إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ							
ख़ानाए काअ़बा का हज़ करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अमन में	हो गया	दाख़िल हुआ उस में	और जो इब्राहीम
مِنْ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ							
से	वेनियाज़	अल्लाह	तो वेशक	कुफ़ किया	और जो - जिस	राह	उस की तरफ़ इस़िताअ़त रखता हो जो
الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	अल्लाह	आयतें	तुम इन्कार करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97 जहान वाले
شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ							
से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	तुम करते हो	पर	गवाह
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُوهَا عِوَجًا ۚ وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ ۚ وَمَا اللَّهُ							
अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूँडते हो उस में	ईमान लाए	जो अल्लाह का रास्ता
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾ يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا فَرِيقًا							
एक ग़िरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो से - जो बेख़बर
مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ﴿١٠٠﴾							
100	हालते कुफ़	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे, जब तक उस में से खर्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम खर्च करोगे कोई चीज़, तो वेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे वनी इसाईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़व्ल कि तौरत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर उस के बाद झूट बाँधे, तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़र्माया, अब तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुशर्रिकों में से न थे। (95)

वेशक सब से पहले जो घर मुक़र्र किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियां हैं खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाख़िल हुआ वह अमन में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए काअ़बा का हज़ करना, जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस़िताअ़त रखता हो, और जिस ने कुफ़ किया, तो वेशक अल्लाह जहान वालों से वेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें, ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (वाख़बर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें, ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को)? जो अल्लाह पर ईमान लाए तुम उस में कजी ढूँडते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़ में फेर देंगे। (100)

और तुम कैसे कुफ़र करते हो? जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं, और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है, और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी, तो तुम उस के फज़ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअत रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे, और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो सुतफ़रिक् हो गए और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं उन के लिए है अज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन वाज़ चहरे सफ़ेद होंगे, और वाज़ चहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़र किया? तो अब अज़ाब चखो, क्यों कि तुम कुफ़र करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चहरे सफ़ेद होंगे, वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात है, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई जुल्म नहीं चाहता। (108)

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ								
और कैसे	तुम कुफ़ करते हो	जबकि तुम	पढ़ी जाती है	तुम पर	आयतें	अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	उस का रसूल
وَمَنْ يَعْصِمْ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾								
और जो	मज़बूत पकड़ेगा	अल्लाह को	तो उसे हिदायत दी गई	तरफ़	सीधा रास्ता	101		
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٠٢﴾								
ऐ	वह जो कि	ईमान लाए	तुम डरो	अल्लाह	हक़	उस से डरना	और तुम हरगिज़ न मरना	मगर
मुसलमान (जमा)	102	और मज़बूती से पकड़ लो	रस्सी को	अल्लाह	सब मिल कर	और न	आपस में फूट डालो	और याद करो
نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾								
उस के फज़ल से	भाई भाई	और तुम थे	पर	किनारा	गढ़ा	से (के)	आग	तो तुम्हें बचा लिया
उस से	इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपनी आयात	ताकि तुम	हिदायत पाओ	103
तुम से (में)	एक जमाअत	वह बुलाए	तरफ़	भलाई	और वह हुक्म दे	अच्छे कामों का	और वह रोके	
عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾								
बुराई से	और यही लोग	वह	कामयाब होने वाले	104	और न हो जाओ	उन की तरह जो		
मुतफ़रिक् हो गए	और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे	उस के बाद	कि	उन के पास आगए	उन के	वाज़ेह हुक्म	और यही लोग	उन के लिए
अज़ाब	बड़ा	105	दिन	सफ़ेद होंगे	वाज़ चहरे	और सियाह होंगे	वाज़ चहरे	
पस जो	लोग	सियाह हुए	उन के चहरे	क्या तुम ने कुफ़ किया	बाद	अपने ईमान		
तो चखो	अज़ाब	क्यों कि	तुम थे	कुफ़ करते	106	और अलबत्ता	वह लोग जो	सफ़ेद होंगे
فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ								
सो - में	अल्लाह की रहमत	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	107	यह	अल्लाह की आयात	
نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾								
हम पढ़ते हैं वह	आप पर	ठीक ठीक	और नहीं	अल्लाह	चाहता	कोई जुल्म	जहान वालों के लिए	108

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَالّٰى اللّٰهُ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾							
और अल्लाह के लिए जो	आस्मानों में	और जो	जमीन में	और अल्लाह की तरफ	लौटाए जाएंगे	तमाम काम	109
كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ							
तुम हो	बेहतरीन	उम्मत	भेजी गई	लोगों के लिए	तुम हुक्म करते हो	अच्छे कामों का	
وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ							
और मना करते हो	से	बुरे काम	और ईमान लाते हो	अल्लाह पर	और अगर	ईमान ले आते	
اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لّٰهُمْ ۖ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمْ							
अहले किताब	तो था	बेहतर	उन के लिए	उन से	ईमान वाले	और उन के अक्सर	
الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾ لَنْ يُّصْرُوْكُمْ اِلَّا اَذٰى ۚ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُؤْلُوْكُمْ اِلَّا ذٰبَرًا							
नाफरमान	110	हरगिज़ न	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	सिवाए	सताना	और अगर	वह तुम से लड़ेंगे
							वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे
ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدِّلَّةَ اَيْنَ مَا							
फिर	उन की मदद न होगी	111	चर्चा कर दी गई	उन पर	ज़िल्लत	जहां कहीं	
تُقْفُوْا اِلَّا بِحَبْلِ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ							
वह पाए जाएं	सिवाए	उस (अहद)	अल्लाह से	और उस (अहद)	लोगों से	वह लौटे	ग़ज़ब के साथ
مِّنَ اللّٰهِ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةَ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا							
अल्लाह से (के)	और चर्चा कर दी गई	उन पर	मोहताजी	यह	इस लिए कि वह	थे	
يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ							
इन्कार करते	आयतें	अल्लाह	और क़त्ल करते थे	नबी (जमा)	नाहक	यह	
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءٌ ۚ مِنْ							
इस लिए	उन्होंने ने नाफरमानी की	और थे	हद से बढ़ जाते	112	नहीं	बराबर	से (में)
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قٰبِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِنَّآءَ الْيَلِ							
अहले किताब	एक जमाअत	काइम	वह पढ़ते हैं	अल्लाह की आयात	औक़ात - रात		
وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ							
और वह	सिज़्दा करते हैं	113	ईमान रखते हैं	अल्लाह पर	और दिन	आखिरत	
وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ							
और हुक्म करते हैं	अच्छी बात का	और मना करते हैं	से	बुरे काम	और वह दौड़ते हैं		
فِي الْخَيْرٰتِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا							
में	नेक काम	और यही लोग	से	नेकोकार (जमा)	114	और जो	वह करेंगे
مِّنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾							
से (कोई)	नेकी	तो हरगिज़ नाक़्द्री न होगी उस की	और अल्लाह	जानने वाला	परहेज़गारों को	115	

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चर्चा कर दी गई, जहां कहीं वह पाए जाएं, सिवाए उस के कि अल्लाह के अहद में आ जाएं और लोगों के अहद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चर्चा कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे, और नबियों को नाहक क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्होंने ने नाफरमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअत (सीधी राह पर) काइम है, और रात के औक़ात में, अल्लाह की आयात पढ़ते हैं, और वह सिज़्दा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर, और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़्द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (116)

उन की मिसाल जो खर्च करते हैं इस दुन्या में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस कौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपनी जानों पर खुद जुल्म करते हैं। (117)

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ वह तुम्हारी खराबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तकलीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी है अगर तुम अक़ल रखते हो। (118)

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, वेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। (119)

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सबर करो, और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, वेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे धरे हुए है, (120)

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है, (121)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ							
उस की औलाद	और न	उन के माल	उन से (के)	हरगिज़ काम न आएगा	कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक
مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾							
116	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग (दोज़ख़) वाले	और यही लोग	कुछ	अल्लाह से (आगे)
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا							
उस में	हवा	ऐसी - जैसे	दुन्या	ज़िन्दगी	इस	में	खर्च करते हैं
صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا							
और नहीं	फिर उस को हलाक कर दे	जानें अपनी	उन्हों ने जुल्म किया	कौम	खेती	वह जा लगे	पाला
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	117	वह जुल्म करते हैं	अपनी जानें	बल्कि	अल्लाह	जुल्म किया उन पर
لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةً مِّنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ							
तुम तकलीफ़ पाओ	कि	वह चाहते हैं	खराबी	वह कमी नहीं करते	सिवाए - अपने	से	दोस्त (राज़दार)
قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ							
बड़ा	उन के सीने	छुपा हुआ	और जो	उन के मुँह	से	दुश्मनी	अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَٰأَن تُمْ أَوْلَاءِ							
वह लोग	सुन लो - तुम	118	अक़ल रखते	तुम हो	अगर	आयात	तुम्हारे लिए
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ							
वह तुम से मिलते हैं	और जब	सब	किताब पर	और तुम ईमान रखते हो	वह दोस्त रखते हैं तुमहें	और नहीं	तुम दोस्त रखते हो उन को
قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَصَوْا عَالِيَكُمْ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ							
गुस्से	से	उंगलियां	तुम पर	वह काटते हैं	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए
قُلْ مُؤْتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾							
119	सीने वाली (दिल की बातें)	जानने वाला	वेशक अल्लाह	अपने गुस्से में	तुम मर जाओ	कह दीजिए	
إِنْ تَمَسَّكُمْ حَسَنَةٌ تَسُوءُهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوا بِهَا							
उस से	वह खुश होते हैं	कोई बुराई	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगती है	कोई भलाई	पहुँचे तुम्हें
وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا							
कुछ	उन का फ़रेब	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	और परहेज़गारी करो	तुम सबर करो	और अगर		
إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ							
अपने घर	से	आप सुबह सवेरे निकले	और जब	120	घरे हुए है	वह करते हैं	जो कुछ
تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾							
121	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	जंग के	ठिकाने	मोमिन (जमा)	बिठाने लगे

إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا ۖ وَاللَّهُ وَلِيُهُمَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ								
जब	इरादा किया	दो गिरोह	तुम से	कि	हिम्मत हार दें	और अल्लाह	उनका मददगार	और अल्लाह पर
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَانْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ								
चाहिए भरोसा करें	मोमिन	122	और अलवत्ता	मदद कर चुका तुम्हारी	अल्लाह	बदर में	जबकि तुम	कमज़ोर
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ								
तो डरो	अल्लाह	ताकि तुम	शुक्रगुज़ार हो	123	जब आप	कहने लगे	मोमिनों को	
أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ								
क्या काफी नहीं तुम्हारे लिए	कि	मदद करे तुम्हारी	तुम्हारा रब	तीन हज़ार से	से	फरिश्ते		
مُنْزِلِينَ ﴿١٢٤﴾ بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّنْ فُورِهِمْ								
उतारे हुए	124	क्यों नहीं अगर	तुम सबर करो	और परहेज़गारी करो	और तुम पर आएँ	से	फौरन - वह	
هَذَا يُمِدُّكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾								
यह मदद करेगा तुम्हारी	तुम्हारा रब	पाँच हज़ार	से	फरिश्ते	निशान ज़दा	125		
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۚ								
और नहीं	किया - यह	अल्लाह	मगर (सिर्फ)	खुशख़बरी	तुम्हारे लिए	और इस लिए कि इत्मीनान हो	तुम्हारे दिल	उस से
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا								
और नहीं	मदद	मगर (सिवाए)	से	अल्लाह के पास	ग़ालिब	हिक्मत वाला	126	ताकि काट डाले गिरोह
مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتُهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَاسِبِينَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ								
से	वह लोग जो	उन्होंने ने कुफ़ किया	या	उन्हें ज़लील करे	तो वह लौट जाएँ	नामुराद	127	नहीं - आप (स) के लिए
مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَلَهُمْ ظُلُمُونَ ﴿١٢٨﴾								
से	काम (दखल)	कुछ	ख़्वाह तौबा कुबूल कर ले	उन की	या	उन्हें अज़ाब दे	क्यों कि वह	ज़ालिम (जमा)
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ								
और अल्लाह के लिए जो	आस्मानों में	और जो	ज़मीन में	वह बख़्श दे	जिस को	चाहे		
وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ								
और अज़ाब दे	जिस	चाहे	और अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	129	ऐ	जो
أَمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ								
ईमान लाए (ईमान वाले)	न खाओ	सूद	दुगना	दुगना हुआ (चौगना)	और डरो	अल्लाह		
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ								
ताकि तुम	फ़लाह पाओ	130	और - डरो	आग	जो कि	तैयार की गई		
لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾								
काफ़िरों के लिए	131	और हुक्म मानो तुम	अल्लाह	और रसूल	ताकि तुम पर	रहम किया जाए	132	

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलवत्ता अल्लाह तुम्हारी बदर में मदद कर चुका है, जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं? कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फरिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सबर करो, और परहेज़गारी करो, और वह तुम पर फौरन चढ़ आएँ तो तुम्हारा रब यह तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फरिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ तुम्हारी खुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्होंने ने कुफ़ किया, या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएँ। (127)

आप (स) का उस में दखल नहीं कुछ भी, ख़्वाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे, क्यों कि वह ज़ालिम है। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद, दुगना, चौगना, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (132)

और दौड़ो अपने रब की बख्शिश और जन्नत की तरफ, जिस का अर्ज आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो खर्च करते हैं खुशी (खुशहाली) और तकलीफ में, और पी जाते हैं गुस्सा, और मुआफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तई कोई जुल्म कर बैठें, तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्होंने ने किया उस पर न अड़ें, और वह जानते हैं। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ से बख्शिश और बागात हैं जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीक़े (वाकिआत) तो ज़मीन में चलो फिर, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस कौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह दिन है हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए, और तुम में से (बाज़ को) शहीद बनाए (दरजाए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ							
आस्मान (जमा)	उस का अर्ज	और जन्नत	अपना रब	से	बख्शिश	तरफ	और दौड़ो
وَالْأَرْضُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ							
खुशी में	खर्च करते हैं	जो लोग	133	परहेज़गारों के लिए	तैयार की गई	और ज़मीन	
وَالضَّرَّاءِ ۚ وَالْكُظُمِينَ الْغَيْظِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ							
लोग	से	और मुआफ़ करते हैं	गुस्सा	और पी जाते हैं	और तकलीफ		
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا							
जुल्म करें	या	कोई बेहयाई	वह करें	जब	और वह लोग जो	134	एहसान करने वाले
أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۚ وَمَن يَغْفِرِ الذُّنُوبَ							
गुनाह	बख्शता है	और कौन	अपने गुनाहों के लिए	फिर बख्शिश मांगें	वह अल्लाह को याद करें	अपने तई	
إِلَّا اللَّهُ ۚ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾							
135	जानते हैं	और वह	उन्होंने ने किया	जो	पर	वह अड़ें	अल्लाह के सिवा
أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتْ							
और बागात	उन का रब	से	बख्शिश	उन की जज़ा	यही लोग		
تَجَرَّىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنَعَمَ							
और कैसा अच्छा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	बहती है	
أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا							
तो चलो फिर	वाकिआत	तुम से पहले	गुज़र चुकी	136	काम करने वाले	बदला	
فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿١٣٧﴾							
137	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में	
هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾							
138	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और हिदायत	लोगों के लिए	बयान	यह	
وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزِنُوا ۚ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾							
139	ईमान वाले	अगर तुम हो	ग़ालिब	और तुम	और ग़म न खाओ	और सुस्त न पड़ो	
إِنْ يَمَسُّكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ							
अय्याम	और यह	उस जैसा	ज़ख़्म	कौम	पहुँचा	तो अलबत्ता	ज़ख़्म
نُذَوِّلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	जो लोग	अल्लाह	और ताकि मालूम कर ले	लोगों के दरमियान	हम बारी बारी बदलते हैं इस को		
وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾							
140	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह	शहीद (जमा)	तुम से	और बनाए	

وَلِيْمَحْصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقِ الْكٰفِرِيْنَ (141)						
और ताकि पाक साफ़ कर दे	अल्लाह	जो लोग	ईमान लाए	और मिटा दे	काफिर (जमा)	141
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا						
क्या तुम समझते हो?	कि	तुम दाखिल होगे	जन्नत	और अभी नहीं	अल्लाह ने मालूम किया	जो लोग जिहाद करने वाले
مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الصّٰبِرِيْنَ (142) وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ						
तुम में से	और मालूम किया	सब्र करने वाले	142	और अलवत्ता	तुम तमन्ना करते थे	मौत से
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ (143)						
कबल	कि	तुम उस से मिलो	तो अब तुम ने उसे देख लिया	और तुम	देखते हो	143
وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهٖ الرُّسُلُ						
और नहीं	मुहम्मद (स)	मगर (तो)	एक रसूल	अलवत्ता गुज़रे	उन से पहले	रसूल (जमा)
اَفَاٰيُنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ اِنْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يِّنْقَلِبْ						
क्या फिर अगर	वह वफात पा लें	या	कतल हो जाएं	तुम फिर जाओगे	अपनी एड़ियों पर	और जो फिर जाए
عَلٰى عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَّصْرَرَ اللّٰهُ شَيْئًا ۚ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ (144)						
अपनी एड़ियों पर	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा	अल्लाह	कुछ भी	और जल्द जज़ा देगा	अल्लाह	शुक्र करने वाले 144
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّوَجَّلًا ۚ						
और नहीं	किसी शख्स के लिए	कि	वह मरे	बगैर	हुकम से	लिखा हुआ मुकर्ररा वक़्त
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۖ وَمَنْ يُرِدْ						
और जो	चाहेगा	इन्ज़ाम	दुन्या	हम देंगे उस को	उस से	और जो चाहेगा
ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۖ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ (145)						
बदला	आखिरत	हम देंगे उस को	उस से	और हम जल्द जज़ा देंगे	शुक्र करने वाले	145
وَكَاٰيُنْ مِّنْ نّبِيٍّ قُتِلَ ۚ مَعَهُ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۖ فَمَا وَهْنُوْا						
और बहुत से	नबी	लड़े	उन के साथ	अल्लाह वाले	बहुत	पस न सुस्त पड़े
لِمَا اَصَابَهُمْ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكٰنُوْا ۚ						
ब सबब - जो	उन्हें पहुँचे	में	अल्लाह की राह	और न	उन्होंने कमज़ोरी की	और न दब गए
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ (146) وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ اِلَّا اَنْ						
और अल्लाह	दोस्त रखता है	सब्र करने वाले	146	और न था	उन का कहना	कि सिवाए
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْ اَمْرِنَا						
उन्होंने ने दुआ की	ऐ हमारे रब	बख़्शदे हम को	हमारे गुनाह	और हमारी ज़ियादती	हमारे काम में	
وَتَبَتْ اَقْدَامُنَا وَاَنْصُرْنَا عَلٰى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (147)						
और साबित रख	हमारे क़दम	और हमारी मदद फ़रमा	पर	क़ौम	काफिर (जमा)	147

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए, और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो? कि तुम जन्नत में दाख़िल होगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इमतिहान लिया) जो तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलवत्ता तुम उस से मिलने से कबल मौत की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलवत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफात पा लें या कतल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुकम के बगैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुकर्ररा वक़्त, और जो दुन्या का इन्ज़ाम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आखिरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्होंने ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की, और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्होंने ने दुआ की, ऐ हमारे रब! हमें बख़्शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे क़दम, और काफ़िरों की क़ौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुन्या का और आखिरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफिरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अन्करीव काफिरों के दिलों में रुअब डाल देंगे इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की, जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुन्या चाहता था, और तुम में से कोई आखिरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हें आजमाए, और तहकीक़ उस ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा, ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुमहारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

فَاتَهُمُ اللَّهُ ثَوَابِ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾					
इन्आम-ए-आखिरत	और अच्छा	दुन्या	इन्आम	अल्लाह	तो उन्हें दिया
अगर	ईमान लाए	लोग जो	ऐ	148	एहसान करने वाले
दोस्त रखता है	और अल्लाह	तुम कहा मानोगे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	वह तुम्हें फेर देंगे	पर
تُطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يَزْدُوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا حَسْرِينَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ﴿١٥٠﴾					
अगर	ईमान लाए	लोग जो	ऐ	148	एहसान करने वाले
दोस्त रखता है	और अल्लाह	तुम कहा मानोगे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	वह तुम्हें फेर देंगे	पर
फिर तुम पलट जाओगे	तुम्हारी एड़ियाँ	पर	वह तुम्हें फेर देंगे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	तुम कहा मानोगे
سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ					
इस लिए कि उन्होंने ने शरीक किया	रुअब	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	दिल (जमा)	में	अन्करीव हम डाल देंगे
दोज़ख	और उन का ठिकाना	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी	जिस
अल्लाह का	जिस	नहीं उतारी	उस की	कोई सनद	और उन का ठिकाना
إِذْ تَحْسُونَهُمْ بِإِذْنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا أَرْكُم مَّا تَحِبُّونَ ۚ					
तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	उस के हुक्म से	यहां तक कि	जब	तुम ने बुज़दिली की	और झगड़ा किया
काम में	और तुम ने नाफ़रमानी की	उस के बाद	जब तुम्हें दिखाया	जो	तुम चाहते थे
مِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ					
तुम से	जो चाहता था	दुन्या	और तुम से	जो चाहता था	आखिरत
फिर	तुम्हें फेर दिया	उन से	ताकि तुम्हें आजमाए	और तहकीक़	मुआफ़ किया
तुम से (तुम्हें)	तुम्हें फेर दिया	उन से	ताकि तुम्हें आजमाए	और तहकीक़	मुआफ़ किया
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلُونُ عَلَىٰ أَحَدٍ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَابِكُمْ					
और अल्लाह	फ़ज़ल करने वाला	पर	मोमिन (जमा)	जब	तुम चढ़ते थे
और न	तुम चढ़ते थे	जब	मोमिन (जमा)	जब	तुम चढ़ते थे
मुड़ कर देखते थे	किसी को	और रसूल (स)	तुम्हें पुकारते थे	तुम्हारे पीछे से	तुम्हारे पीछे से
فَاتَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۚ وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾					
फिर तुम्हें पहुँचाया	ग़म पर ग़म	ताकि न	तुम रंज करो	पर	जो तुम से निकल गया
और न	जो	तुम्हें पेश आए	और अल्लाह	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۖ										
तुम में से	एक जमाअत	ढाँक लिया	ऊँघ	अमन	ग़म	बाद	तुम पर	उस ने उतारा	फिर	
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنَفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّهِ غَيْرَ الْحَقِّ										
वे हकीकत		अल्लाह के बारे में		वह गुमान करते थे		अपनी जानें		उन्हें फ़िक्र पड़ी थी		और एक जमाअत
ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةُ يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ										
काम	कि	आप कह दें	कुछ	काम	से	हमारे लिए	क्या	वह कहते थे	जाहिलियत	गुमान
كُلَّهُ لِلّهِ ۚ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۚ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ										
अगर होता	वह कहते हैं	आप के लिए (पर)	ज़ाहिर नहीं करते	जो	अपने दिल	में	वह छुपाते हैं	तमाम - अल्लाह के लिए		
لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ ۚ مَا قَتَلْنَا هُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ										
अपने घर (जमा)	में	अगर तुम होते	आप कह दें	यहां	हम न मारे जाते	कुछ	से - काम	हमारे लिए		
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ										
अल्लाह	और ताकि आजमाए	अपनी कतलगाह (जमा)		तरफ	मारा जाना	उन पर	लिखा था	ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग		
مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحَّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ										
जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दिल	में	जो	और ताकि साफ़ कर दे	तुम्हारे सीनों में		जो		
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۖ										
आमने सामने हुई दो जमाअतें		दिन	तुम में से	पीठ फेरेंगे	जो लोग	वेशक	154	सीनों वाले (दिलों के भेद)		
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۚ										
उन से	अल्लाह	और अलबत्ता मुआफ़ कर दिया	जो उन्होंने ने कमाया (आमाल)		बाज़ की वजह से	शैतान	दरहकीकत उन को फुसलादिया			
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا										
न हो जाओ	ईमान वालो (ईमान लाए)		जो लोग	ऐ	155	हिलम वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	वेशक	
كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ										
वह सफ़र करें + ज़मीन (राह) में		जब	अपने भाईयों को		और वह कहते हैं	काफ़िर	उन लोगों की तरह			
أَوْ كَانُوا غَزَىٰ لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا ۚ لِيَجْعَلَ اللَّهُ										
अल्लाह	ताकि बना दे	और न मारे जाते	वह मरते	न	हमारे पास	अगर वह होते	जिहाद में हों	या		
ذَلِكَ حَسْرَةٌ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ										
और मारता है		ज़िन्दा करता है	और अल्लाह	उन के दिल		में	हसरत	यह - उस		
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ										
अल्लाह की राह		में	तुम मारे जाओ	और अलबत्ता अगर	156	देखने वाला	तुम करते हो	जो कुछ	और अल्लाह	
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۚ										
157	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और रहमत	अल्लाह	से	यकीनन बख़्शिश	या तुम मर जाओ		

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अमन ऊँघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअत को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअत को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में बेहकीकत गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की किस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी कतलगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आजमाए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। (154)

वेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए, जिस दिन दो जमाअतें आमने सामने हुई, दरहकीकत उन्हें शैतान ने फुसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ कर दिया, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुरदवार। (155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाईयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जिहाद में हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हसरत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यकीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। (157)

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यकीनन अल्लाह की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दखू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) मुआफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, वेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह जुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की खुशनूदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुखतलिफ़) दर्जे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

वेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनों) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा, उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और वेशक वह उस से क़व्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (165)

وَلَيْنَ مُتُّمٌ أَوْ قُتِلْتُمْ لِّلَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾ فِيمَا رَحْمَةٍ							
और अगर	तुम मर गए	या	तुम मार दिए गए	यकीनन अल्लाह की तरफ़	तुम इकट्ठे किए जाओगे	158	पस - से
مِّنَ اللَّهِ لَئِنْ كُنْتُمْ قَوْمًا غَالِبًا عَلَیْهِ الْقُلُوبُ لَأَنْفَضُوا مِنْ حَوْلِكَ							
से	अल्लाह	नरम दिल	उन के लिए	और अगर आप (स) होते	तुन्दखू	सख़्त दिल	तो वह मुन्तशिर हो जाते
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِی الْأَمْرِ							
आप (स)	मुआफ़ कर दें	उन से (उन्हें)	और बख़्शिश मांगें	उन के लिए	और मश्वरा करें उन से	में	काम
فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾							
फिर जब	आप (स) इरादा कर लें	तो भरोसा करें	अल्लाह पर	वेशक	अल्लाह	दोस्त रखता है	भरोसा करने वाले
إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي							
अगर	वह मदद करे तुम्हारी	अल्लाह	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	तुम पर	और अगर	वह तुम्हें छोड़ दे	तो कौन?
يَنْصُرْكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ							
वह तुम्हारी मदद करे	उस के बाद	और अल्लाह पर	चाहिए कि भरोसा करें	ईमान वाले	160	और नहीं है	था - है
لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
नबी के लिए	कि छुपाए	और जो	छुपाएगा	लाएगा	जो उस ने छुपाया	क़ियामत के दिन	
ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾ أَفَمَنْ أَتَّبَعَ							
फिर	पूरा पाएगा	हर शख्स	जो	उस ने कमाया	और वह	जुल्म न किए जाएंगे	तो क्या जिस
رِضْوَانِ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخِطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمَ							
रज़ा (खुशनूदी)	अल्लाह	मानिन्द - जो	लौटा	गुस्से के साथ	अल्लाह के	और उस का ठिकाना	जहन्नम
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا							
और बुरा	ठिकाना	162	वह - उन	दर्जे	पास	अल्लाह	और देखने वाला
يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا							
वह करते हैं	163	अलबत्ता वेशक	एहसान किया	अल्लाह	पर	ईमान वाले (मोमिन)	जब भेजा
مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ							
से	उन की जानें (उन के दरमियान)	वह पढ़ता है	उन पर	उस की आयतें	और उन्हें पाक करता है	और उनमें सिखाता है	किताब
وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾							
और हिक्मत	और वेशक	वह थे	उस से क़व्ल	अलबत्ता - में	गुमराही	खुली	164
أَوَلَمَّْا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا							
क्या जब	तुम्हें पहुँची	कोई मुसीबत	अलबत्ता तुम ने पहुँचाई	उस से दो चंद	तुम कहते हो	कहां से यह?	
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾							
आप कह दें	वह	से	पास	तुम्हारी जानें (अपने पास)	वेशक	अल्लाह	पर

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقَى الْجَمْعَنِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾									
और जो	तुम्हें पहुँचा	दिन	मुडभेड़ हुई	दो जमाअतें	अल्लाह तो हुक्म से	और ताकि वह मालूम कर ले	ईमान वाले	166	
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۖ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا									
और ताकि जान ले	वह जो कि	मुनाफ़िक हुए	और कहा गया	उन्हें	आओ	लड़ो			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْفَعُوا ۚ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَا تَبْعُنْكُمُ									
में	अल्लाह की राह	या	दिफाअ करो	वह बोले	अगर हम जानते	जंग	ज़रूर तुम्हारा साथ देते		
هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ									
वह	कुफ़ के लिए (कुफ़ से)	उस दिन	ज़ियादा करीब	उन से	व निसबत ईमान	वह कहते हैं	अपने मुँह से		
مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا									
जो नहीं	उन के दिलों में	और अल्लाह	खूब जानने वाला	जो	वह छुपाते हैं	167	वह लोग जो	उन्होंने ने कहा	
لَاخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۚ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ									
अपने भाईयों के बारे में	और वह बैठे रहे	अगर	वह हमारी मानते	वह न मारे जाते	कह दीजिए	तुम हटा दो	से		
أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا									
अपनी जानें	मौत	अगर	तुम हो	सच्चे	168	और न	जो लोग	मारे गए	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾									
में	रास्ता	अल्लाह	मुर्दा (जमा)	बल्कि	ज़िन्दा (जमा)	पास	अपना रब	वह रिज़ूक दिए जाते हैं	169
فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ									
खुश	से - जो	उन्हें दिया	अल्लाह	अपने फज़ल से	और खुश वक़्त है	उन की तरफ से जो	नहीं		
يَلْحَقُوا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾									
मिले	उन से	से	उन के पीछे	यह कि नहीं	कोई खौफ	उन पर	और न	वह	170
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ									
वह खुशियां मना रहे हैं	नेमत से	से	अल्लाह	और फज़ल	और यह कि	अल्लाह	ज़ाया नहीं करता		
أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ ﴿١٧١﴾ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا									
अजर	ईमान वाले	171	जिन लोगों ने	कुबूल किया	अल्लाह का	और रसूल	वाद	कि	
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾									
उन्हें पहुँचा	ज़ख़्म	उन के लिए जो	उन्होंने नेकी की	उन में से	और परहेज़गारी की	अजर	बड़ा	172	
الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ									
वह लोग जो	कहा	उन के लिए	लोग	कि	लोग	जमा किया है	तुम्हारे लिए	पस उन से डरो	
فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۚ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾									
तो ज़ियादा हुआ उन का	ईमान	और उन्होंने ने कहा	हमारे लिए काफी	अल्लाह	और कैसा अच्छा	कारसाज़	173		

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुकम से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक हुए, और उन्हें कहा गया आओ! अल्लाह की राह में लड़ो, या दिफाअ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़ से ज़ियादा करीब थे व निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्होंने ने अपने भाईयों के बारे में कहा और खुद बैठे रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो, अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ ख़याल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़ूक पाते हैं। (169)

खुश हैं उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त हैं जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई खौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता कि ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुकम) कुबूल किया उस के बाद उन्हें ज़ख़्म पहुँचा उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुकाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्होंने ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फज़ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्होंने ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुन्न से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यकीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आखिरत में कोई हिस्सा न दे। और उन के लिए अज़ाब है बड़ा। (176)

वेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहकीकत हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो, यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अज़र है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें, जो उस (माल) में बुख़ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए बल्कि वह उन के लिए बुरा है, जिस (माल) में उन्होंने ने बुख़ल किया अन्क़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمَسَّهْمُ سُوءٌ ۖ وَاتَّبَعُوا							
और उन्होंने ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फज़ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे
رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ (١٧٤) إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ							
शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फज़ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा
يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهُ ۖ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونَ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ (١٧٥)							
175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुन्न से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त डराता है
وَلَا يَخْزَنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ							
कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यकीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें और न
يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (١٧٦)							
176	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	आखिरत में	कोई हिस्सा	उन को	दे कि न अल्लाह चाहता है
إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	कुछ	अल्लाह	बिगाड़ सकते	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्होंने ने मोल लिया वह लोग जो वेशक
عَذَابٌ أَلِيمٌ (١٧٧) وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّامُ نُمَلَّى لَهُمْ خَيْرٌ							
बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177 दर्दनाक अज़ाब
لَا نَفْسِهِمْ ۖ إِنَّمَا نُمَلَّى لَهُمْ لِيُزَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ (١٧٨)							
178	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बढ़ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं दरहकीकत उन के लिए
مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह नहीं है
يَمَيِّزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ							
ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक जुदा कर दे
وَلَكِنَّ اللَّهَ يُجَٰبِي مَنْ رُّسِلَهُ مِنْ يَشَآءُ ۚ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ							
और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है अल्लाह और लेकिन
وَإِنْ تَوَّابُونَ وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ (١٧٩) وَلَا يَحْسَبَنَّ							
हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अज़र	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ और अगर
الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ۗ							
उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फज़ल से	अल्लाह	उन्हें दिया	में-जो	बुख़ल करते हैं जो लोग
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۗ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۗ							
क़ियामत	दिन	उस में	उन्होंने ने बुख़ल किया	जो	अन्क़रीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा वह बल्कि
وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (١٨٠)							
180	बाख़बर	करते हो	जो तुम	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ								
मालदार	और हम	फ़कीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	कौल (वात)	अल्लाह	अलबत्ता सुन लिया
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ								
नाहक		नबी (जमा)		और उन का कतल करना		जो उन्होंने ने कहा		अब हम लिख रखेंगे
وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ								
आगे भेजा	बदला - जो	यह	181	जलाने वाला	अज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे	
أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾ الَّذِينَ قَالُوا								
कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	नहीं	अल्लाह	और यह कि	तुम्हारे हाथ
إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلاَّ نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا								
वह लाए हमारे पास	यहां तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाएंगे	कि न	हम से	अहद किया	अल्लाह	कि
بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۚ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ								
निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	कुरबानी	
وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾								
183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें कतल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो	
فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا								
वह आए	आप से पहले		बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाए आप को	फिर अगर	
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ								
मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफे	खुली निशानियों के साथ
وَأَنَّمَا تُوقَفُونَ أَجْوَرَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فَمَن								
फिर जो	क़ियामत के दिन			तुम्हारे अजर	पूरे पूरे मिलेंगे		और वेशक	
زُحْرَجَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا								
दुन्या	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाखिल किया गया	दोज़ख	से	दूर किया गया
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾ لَّسْبُلُونَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ								
और अपनी जानें	अपने माल		में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिवाए
وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ								
तुम से पहले		किताब दी गई		वह लोग जिन्हें		से	और ज़रूर सुनोगे	
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ أَذَىٰ كَثِيرًا								
बहुत		दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)					और - से
وَأَنْ تَصِيرُوا تَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾								
186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो वेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फकीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्होंने ने कहा और उन का नबियों को नाहक कत्ल करना, और कहेंगे चखो जलाने वाला अज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अहद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएंगे, यहां तक कि वह हमारे पास कुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ, और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें कत्ल किया? अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाए तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल, जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफे और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइका) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख से दूर किया गया, और जन्नत में दाखिल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुन्या की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई, और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (वातें) बहुत सी, और अगर तुम सव्र करो, और परहेज़गारी करो, तो वेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्होंने ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया, और उस के बदले थोड़ी कीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह खरीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग खुश होते हैं जो उन्होंने ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्होंने ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (188)

और अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़दिर है। (189)

वेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! वेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना वह ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराईयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ ۚ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۖ سُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا إِنَّا أَتَيْنَاكَ مِنْ تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾						
और जब	लिया	अल्लाह	अहद	वह लोग जिन्हें	किताब दी गई	उसे ज़रूर बयान कर देना
लोगों के लिए	और न	छुपाना उसे	तो उन्होंने ने उसे फेंक दिया	पीछे	अपनी पीठ (जमा)	हासिल की उस के बदले
कीमत	थोड़ी	तो कितना बुरा है जो	वह खरीदते हैं	187	आप हरगिज़ न समझें	जो लोग
खुश होते हैं	उस पर जो	उन्होंने ने किया	और वह चाहते हैं	कि	उन की तारीफ़ की जाए	उस पर जो
उन्होंने ने नहीं किया	पस न	समझें आप उन्हें	रिहा शुदा	से	अज़ाब	और उन के लिए
अज़ाब	दर्दनाक	188	और अल्लाह के लिए	बादशाहत	आस्मानों	और ज़मीन
और अल्लाह	पर	हर शै	क़दिर	189	वेशक	में
पैदाइश	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और	190	अक़ल वालों के लिए	निशानियां हैं
जो लोग	याद करते हैं	अल्लाह	खड़े	और बैठे	और पर	अपनी करवटें
और वह ग़ौर करते हैं	पैदाइश में	आस्मानों	और ज़मीन	ऐ हमारे रब	नहीं	
तू ने पैदा किया	यह	बे मक़सद	तू पाक है	तू हमें बचा ले	अज़ाब	आग (दोज़ख़)
ऐ हमारे रब	वेशक तू	जो - जिस	दाख़िल किया	आग (दोज़ख़)	तो ज़रूर	तू ने उस को रुसवा किया
और नहीं	और	ज़ालिमों के लिए				
कोई	मददगार	192	ऐ हमारे रब	वेशक हम ने	सुना	पुकारने वाला
पुकारता है						
ईमान के लिए	कि ईमान ले आओ	अपने रब पर	सो हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	तो बख़श दे	हमें
हमारे गुनाह	और दूर कर दे हम से	हमारी बुराईयां	और हमें मौत दे	नेकों के साथ	193	

رَبَّنَا وَاتِّنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسْلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝									
कियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीआ)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब		
إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ									
मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस कुबूल की	194	वादा	नहीं खिलाफ़ करता	वेशक तू
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۝									
से - वाज़ (आपस में)	तुम में से	या औरत	मर्द से	तुम में से	कोई मेहनत करने वाला				
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي									
मेरी राह में	और सताए गए	अपने शहरों	से	और निकाले गए	उन्होंने ने हिज़त की	सो लोग			
وَقَاتِلُوا وَقَاتِلُوا لَا كُفْرَنَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخْلَنَّهُمْ									
और ज़रूर उन्हें दाखिल करूँगा	उन की बुराईयां	उन से	मैं ज़रूर दूर करूँगा	और मारे गए	और लड़े				
جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۝									
अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सवाब	नहरें	उन के नीचे	से	बहती है	बागात		
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّتْكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا									
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	चलना फिरना	न धोका दे आप (स) को	195	सवाब	अच्छा	उस के पास	और अल्लाह		
فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۝									
दोज़ख़	उन का ठिकाना	फिर	थोड़ा	फाइदा	196	शहर (जमा)	में		
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّتٌ تَجْرِي									
बहती है	बागात	उन के लिए	अपना रब	डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197	बिछौना (आराम गाह)	और कितना बुरा
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خُلْدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۝ وَمَا									
और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	
عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ									
वाज़ वह जो	अहले किताब	से	और वेशक	198	नेक लोगों के लिए	बेहतर	अल्लाह के पास		
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشْعِينَ ۝									
अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं
لَا يَشْتَرُونَ بِآيَةِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ									
उन का अजर	उन के लिए	यही लोग	थोड़ा	मोल	अल्लाह	आयतों का	मोल नहीं लेते		
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا									
तुम सब्द करो	ईमान वालो	ऐ	199	हिसाब	जल्द	अल्लाह वेशक	उन का रब	पास	
وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾									
200	सुराद को पहुँचो	ताकि तुम	अल्लाह	और डरो	और जंग की तैयारी करो	और मुकाबले में मज़बूत रहो			

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें कियामत के दिन रुसवा न करना, वेशक तू नहीं खिलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) कुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो) सो जिन लोगों ने हिज़त की, और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए, और लड़े, और मारे गए, मैं उन की बुराईयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा, और उन्हें वागात में दाखिल करूँगा, बहती है जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आरामगाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए वागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और वेशक अहले किताब में से वाज़ वह है जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर, और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्द करो, और मुकाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ) से पैदा किया, और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औरतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (खयाल रखो) रिश्तों का, वेशक अल्लाह है तुम पर निगहबान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), वेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औरतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौडी के तुम मालिक हो, यह उस के करीब है कि न झुक पड़ो। (3)

और औरतों को उन के मेहर खुशी से दे दो, फिर अगर वह खुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार खुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेज़कूलों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीज़ा) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मज़रूफ़ बात। (5)

رُكُوعَاتُهَا ٢٤		(٤) سُورَةُ النَّسَاءِ		آيَاتُهَا ١٧٦	
रुकुआत 24		(4) सूरतुन निसा		आयात 176	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○					
रहम करने वाला		बहुत मेहरबान		अल्लाह नाम से	
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ					
जान	से	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	अपना रब	डरो लोग ऐ
وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا					
बहुत	मर्द (जमा)	दोनों से	और फैलाए	जोड़ा उस का	उस से और पैदा किया एक
وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ					
और रिश्ते		उस से (उस के नाम पर)	आपस में मांगते हो	वह जो	अल्लाह और डरो और औरतें
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿١﴾ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ					
उन के माल	यतीम (जमा)	और दो	1	निगहवान	तुम पर है अल्लाह वेशक
وَلَا تَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ					
उन के माल	खाओ	और न	पाक से	नापाक	बदलो और न
إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا					
कि न	तुम डरो	और अगर	2	बड़ा	गुनाह है वेशक अपने माल तरफ़ (साथ)
تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ					
तुम्हें	पसन्द हो	जो	तो निकाह कर लो	यतीमों	में इन्साफ़ कर सकोगे
مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلثَ وَرُبْعَ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا					
इन्साफ़ कर सकोगे	कि न	तुम्हें अन्देशा हो	फिर अगर	और चार, चार	और तीन, तीन दो, दो औरतें से
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٣﴾					
3	झुक पड़ो	कि न	करीब तर	यह	लौड़ी जिस के तुम मालिक हो जो या तो एक ही
وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ					
तुम को	खुशी से छोड़ दें	फिर अगर	खुशी से	उन के मेहर	औरतें और दे दो
عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيًّا ﴿٤﴾ وَلَا تُؤْتُوا					
दो	और न	4	मज़ेदार, खुशगवार	तो उसे खाओ	दिल से उस से कुछ
السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيمًا ۚ وَأَرْزُقُوهُمْ					
और उन्हें खिलाते रहो	सहारा	तुम्हारे लिए	अल्लाह बनाया	जो	अपने माल वेशकूल (जमा)
فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٥﴾					
5	मज़कूल	बात	उन से	और कहो	और उन्हें पहनाते रहो उस में

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۖ فَإِنْ آنَسْتُمْ							
तुम पाओ	फिर अगर	निकाह	वह पहुँचें	जब	यहाँ तक कि	यतीम (जमा)	और आजमाते रहो
مِنْهُمْ زُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا							
वह खाओ	और न	उन के माल	उन के	तो हवाले कर दो	सलाहियत	उन में	
إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا							
ग़नी	हो	और जो	वह बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी जल्दी	ज़रूरत से ज़ियादा	
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ							
दस्तूर के मुताबिक	तो खाए	हाजत मन्द	हो	और जो	वचता रहे		
فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ							
उन पर	तो गवाह कर लो	उन के माल	उन के	हवाले करो	फिर जब		
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ (6)							
छोड़ा	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए	6	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी
الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا							
उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	और कराबतदार	माँ बाप			
تَرَكَ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ							
ज़ियादा	या	उस से	थोड़ा	उस में से	और कराबतदार	माँ बाप	छोड़ा
نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۚ (7)							
तक़सीम के वक़्त	हाज़िर हों	और जब	7	मुक़र्रर किया हुआ	हिस्सा		
أُولَئِكَ الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ							
उस से	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	और मिसकीन	और यतीम	रिश्तेदार			
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ (8)							
वह लोग	और चाहिए कि डरें	8	अच्छी	बात	उन से	और कहो	
لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا خَافُوا							
उन्हें फ़िक्र हो	नातवां	औलाद	अपने पीछे	से	छोड़ जाएं	अगर	
عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ (9)							
9	सीधी	बात	और चाहिए कि कहें	अल्लाह	पस चाहिए कि वह डरें	उन का	
إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا							
उस के सिवा कुछ नहीं	जुल्म से	यतीमों	माल	खाते हैं	जो लोग	वेशक	
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۚ (10)							
10	आग (दोज़ख़)	और अन्क़रीब दाख़िल होंगे	आग	अपने पेट	में	वह भर रहे हैं	

और यतीमों को आजमाते रहो यहाँ तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदबीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा, और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो ग़नी हो वह (माले यतीम से) वचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और कराबतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और कराबतदारों ने, ख़ाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन, तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद हो तो उन्हें उन की फ़िक्र हो, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें, और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

वेशक जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, और कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अन्क़रीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी वीविवां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें वसीयत के बाद चौथाई हिस्सा है, जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) कर्ज, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) कर्ज, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औरत की जो “कलाला” है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छठा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) कर्ज (बशर्त यह कि किसी को) नुक्सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। (12)

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثِيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ								
तुम्हें वसीयत करता है	अल्लाह	में	तुम्हारी औलाद	मर्द को	मानिंद (बराबर)	हिस्सा	दो औरतें	फिर अगर
نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا								
औरतें	ज़ियादा	दो	तो उन के लिए	दो तिहाई	जो छोड़ा (तरका)	और अगर	हो	एक
النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ								
निस्फ	और माँ बाप के लिए	हर एक के लिए	उन दोनों में से	छटा हिस्सा (1/6)	उस से जो	छोड़ा (तरका)	अगर हो	
لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوُهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ								
उस की औलाद	फिर अगर	न हो	उस की औलाद	और उस के वारिस हों	माँ बाप	तो उस की माँ का	तिहाई (1/3)	
فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ الشُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
फिर अगर	उस के हों	कई भाई बहन	तो उस की माँ का	छटा (1/6)	से	बाद	वसीयत	
يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ أَبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ ۚ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ								
उस की वसीयत की हो	या कर्ज़	तुम्हारे बाप	और तुम्हारे बेटे	तुम को नहीं मालूम	उन में से कौन	नज़दीक तर तुम्हारे लिए		
نَفْعًا ۚ فَرِيضَةٌ مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١﴾								
नफ़ा	हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है	अल्लाह का	बेशक अल्लाह	है	जानने वाला	हिक्मत वाला	11	
وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ								
और तुम्हारे लिए	आधा	जो छोड़ मरें	तुम्हारी वीवियां	अगर	न हो	उन की कोई औलाद	फिर अगर	हो
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصَيْنَ بِهَا								
उन की औलाद	तो तुम्हारे लिए	चौथाई (1/4)	उस में से जो वह छोड़ें	बाद	वसीयत	वह वसीयत कर जाएं	उस की	
أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ								
या कर्ज़	और उन के लिए	चौथाई	उस में से जो	तुम छोड़ जाओ	अगर	न हो	तुम्हारी औलाद	फिर अगर
كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمْنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
हो तुम्हारी	औलाद	तो उन के लिए	आठवां (1/8)	उस से जो तुम छोड़ जाओ	से	बाद	वसीयत	
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَلَةً أَوْ امْرَأَةٌ								
तुम वसीयत करो	उस की	या कर्ज़	और अगर	हो	ऐसा मर्द	मीरास हो	जिस का बाप बेटा न हो	या औरत
وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ								
और उस	भाई	या बहन	तो तमाम के लिए	उन में से हर एक	छटा (1/6)	फिर अगर	हों	ज़ियादा
مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ ۚ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصَىٰ بِهَا								
उस से (एक से)	तो वह सब	शरीक	तिहाई (1/3)	उस के बाद	वसीयत	जिस की वसीयत की जाए		
أَوْ دَيْنٍ ۚ غَيْرِ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةٌ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾								
या कर्ज़	नुक्सान दह न हो	हुक्म	अल्लाह से	और अल्लाह	जानने वाला	हिल्म वाला	12	

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ							
बागात	वह उसे दाखिल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअत करे	और जो	अल्लाह	हदें	यह
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ الْفَوْزُ							
कामयाबी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	वहती हैं	
الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ							
उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफरमानी	और जो	13	बड़ी
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٤﴾ وَالَّتِي							
और जो औरतें	14	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा	वह उसे दाखिल करेगा
يَأْتَيْنِ الْفَاحِشَةُ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ							
उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औरतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों		
أَرْبَعَةً مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ							
घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार		
حَتَّى يَتَوَفَّيَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾							
15	कोई सवील	उन के लिए	अल्लाह	कर दे	या	मौत	उन्हें उठा ले यहाँ तक कि
وَالَّذِينَ يَأْتِيْنَهَا مِنْكُمْ فَادُّوهُمَ ۖ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا							
और जो दो	और जो दो	मुर्तकिब हों	तुम में से	तो उन्हें ईज़ा दो	फिर अगर वह तौबा करें	और इसलाह कर लें	
فَاعْرِضُوا عَنْهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿١٦﴾							
16	निहायत मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	है	अल्लाह	वेशक	उन का	तो पीछा छोड़ दो
إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ الشُّوْرَ بَٰجِهَالَةٍ							
नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा कुबूल करना	उस के सिवा नहीं	
ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ							
अल्लाह	तौबा कुबूल करता है	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर		
عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ							
तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	उन की
لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ							
उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहाँ तक	बुराईयाँ	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)	
الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْئِنَّ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ							
मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे	मौत
وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾							
18	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफ़िर	और वह

यह अल्लाह की (मुकर्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा वह उसे बागात में दाखिल करेगा, जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा, और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाखिल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औरतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मौत उन्हें उठा ले, या अल्लाह उन के लिए कोई सवील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें, और अपनी इसलाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा कुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा कुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराईयाँ (गुनाह) करते रहते हैं यहाँ तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़ में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औरतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औरतों के साथ दस्तूर के मुताबिक गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो अयन मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक वीवी की जगह दूसरी वीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को खज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहबत कर चुका), और उन्होंने ने तुम से पुख्ता अहद लिया। (21)

और उन औरतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और गुज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीका) था। (22)

तुम पर हराम की गई तुम्हारी माएँ, और तुम्हारी बेटियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी खालाएँ, और भतीजियाँ, और बेटियाँ बहन की (भाजियाँ), और तुम्हारी रज़ाई माएँ जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औरतों की माएँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियाँ जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन वीवियों से जिन से तुम ने सुहबत की, पस अगर तुम ने उन से सुहबत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की वीवियाँ जो तुम्हारी पुशत से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़शने वाला, मेहरवान है। (23)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا								
और न	ज़बरदस्ती	औरतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	
تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ								
मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो	
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ								
वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक		और उन से गुज़रान करो		खुली हुई	बेहयाई	
فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾								
19	बहुत	भलाई	उस में	अल्लाह	और रखे	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है
وَأِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ ۖ وَآتَيْتُمْ إِحْدَهُنَّ قِنْطَارًا								
खज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी बीवी	जगह (बदले)	एक बीवी	बदल लेना	तुम चाहो	और अगर
فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ اتَّخِذُوا مِنْهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾								
20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो	
وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ								
तुम से	और उन्होंने ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे	
مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا								
मगर	औरतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21	पुख्ता अहद
مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ								
हराम की गई	22	रास्ता (तरीका)	और बुरा	और गुज़ब की बात	बेहयाई	था	बेशक वह	जो गुज़र चुका
عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنْتُ								
और भतीजियां	और तुम्हारी खालाएं	और तुम्हारी फूफियां	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियां	तुम्हारी माएँ	तुम पर		
وَبَنْتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَتُكُمُ مِنَ الرِّضَاعَةِ								
दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्होंने ने	और तुम्हारी माएँ	और बहन कि बेटियां		
وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي								
जिन से	तुम्हारी वीवियां	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियां	और तुम्हारी औरतों की माएँ	
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۖ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۖ								
तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहबत			पस अगर	उन से	तुम ने सुहबत की
وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ ۖ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ								
दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुशत	से	जो	तुम्हारे बेटे	और वीवियां	
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾								
23	मेहरबान	बख़शने वाला	है	अल्लाह	बेशक	पहले गुज़र चुका	मगर जो	